9

वर्तमान समय में शिक्षक और शिक्षार्थियों के संबंधों की समीक्षा एवं उपाय

चित्ररेखा*
मनोज कुमार**

वैसे तो गुरु या शिक्षक का कोई रूप नहीं होता। वह किसी भी रूप में हो सकता है अर्थात् जिससे हम कुछ सीखते हैं या जो हमारा मार्गदर्शन करता है, वह ही हमारा गुरु कहलाता है। हमारा शिक्षक/गुरु मानव और किताबों आदि के रूप में भी हो सकता है। किताबों में दी गई जानकारियाँ, कहानियाँ या घटनाएँ आदि भी हमारे लिए मार्गदर्शक और गुरु का कम कर देती हैं, जैसे मणिपुर के नौंगपोक काकचिंग गाँव के एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली मीराबाई चानू की जिंदगी का लक्ष्य आठवीं कक्षा की किताब में दी गई वेटलिफ़्टर कुंज़रानी देवी के एक ज़िक्र ने बदल दिया और आज वे एक प्रसिद्ध वेटलिफ़्टर हैं। परंतु इस लेख में हम ऐसे शिक्षक की बात कर रहे हैं जो जीवित है, मानवीय गुणों से संपन्न है। जो अक्षर ज्ञान कराकर हमारे अंदर ज्ञान व समझ का संचार करता है। प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष व औपचारिक रूप से शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अपने शिक्षार्थियों के संपर्क में रहता है। यह बात सार्वभौमिक सत्य है कि शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध एक दूसरे के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। परंतु कुछ समय से शिक्षक का शिक्षार्थी पर और शिक्षार्थी का शिक्षक पर से विश्वास, स्नेह, लगाव, सम्मान, आदरभाव आदि कहीं कम होता जा रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है? इस लेख में शिक्षक और शिक्षार्थी के संबंधों की महत्ता की समीक्षा करने के साथ-साथ उन कारकों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिनके कारण आज इनके मध्य पारस्परिक संबंधों की दूरी बढ़ रही है और दूरी को कम करने के राष्ट्रीय व राज्य सरकार (दिल्ली) द्वारा किए गए उपायों पर भी चर्चा की गई है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक का काम सिर्फ़ छात्रों को शिक्षा देना ही नहीं है बल्कि शिक्षक को छात्रों का बौद्धिक विकास करने के साथ-साथ उनमें देश के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना भी जाग्रत करनी चाहिए। शिक्षक को सिर्फ़ शिक्षा देकर ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए बल्कि छात्रों से अपने लिए प्रेम, स्नेह और सम्मान भी हासिल करना चाहिए इसलिए उसे निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए।

शिक्षक और शिक्षार्थी के संबंधों पर चर्चा करने से पूर्व यह जानने की आवश्यकता है कि शिक्षक कौन है? शिक्षक जिससे गुरु/अध्यापक/शिक्षक/आचार्य

*सहायक प्रोफ़ेसर, (एल.एस.ई), करिकुलम एंड पैडागॉजी, मण्डलीय संस्थान, (डी.आई.ई.टी. दक्षिण-पश्चिम) घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली 110 073
**टी.जी.टी., सोशल साईंस, (शिक्षा विभाग) रा.व.मा.बा.वि. मोती बाग-1, नयी दिल्ली 110 021

आदि के नाम से जाना जाता है। यह वह व्यक्ति है जो अपने ज्ञान से समाज को प्रकाशित करता है, जो अज्ञान रूपी अँधेरे में आशा का दीप जलाने का प्रयास करता है और संपूर्ण समाज की अज्ञानता को ज्ञान व समझ में परिवर्तित करता है। इस प्रकार गुरु का अर्थ है अंधकार (अज्ञानता) को हटाने वाला। शिक्षक कुएँ में पाई जाने वाली उस लता के समान है जिसके माध्यम (सहारे) से छात्र कुएँ (अज्ञानता, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, गुलामी) से बाहर निकल पाता है। शिक्षक न केवल वर्तमान अपितु भविष्य का रचयिता होता है। यह अपने शिष्य को सफलता की ऊँचाईयों तक पहुँचाने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है और स्वयं एकांत में खड़े होकर अपने शिष्य की सफलता पर फ़ख्र एवं गर्व महसूस करता है। उसका ज्ञान, समझ व अनुभव उसके पास वह बेशकीमती पूँजी है जिससे वह एक सभ्य एवं विकसित समाज एवं राष्ट्र की स्थापना कर सकता है। समाज में एक शिक्षक ही ऐसा व्यक्ति है जो अपने चिंतन व ज्ञान से आशावादी, समीक्षावादी व स्वतंत्र सोच की नींव रख सकता है। अपने ज्ञान व सोच से न केवल छात्रों की सोच, चिंतनशक्ति, सृजनात्मक शक्ति, कल्पनाशक्ति व निर्णयशक्ति को बदलने की क्षमता रखता है बल्कि समाज में भी अपेक्षित सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता भी रखता है। इसलिए अध्यापक की एक चूक का असर समस्त वर्तमान व भावी पीढ़ी पर पड़ता है। शिक्षक और शिष्य दोनों एक कड़ी से जुड़े हैं जिसके एक छोर पर शिक्षक है और दूसरे छोर पर शिक्षार्थी/शिष्य।

शिक्षार्थी

शिष्य जिसे शिक्षार्थी/छात्र/विद्यार्थी आदि के नाम से जाना जाता है। शिष्य वह है जो ज्ञान का अर्जन करता है। वह किसी भी उम्र का हो सकता है। वैसे तो हम सभी अपने ज्ञान का अर्जन एवं निर्माण स्वयं करते हैं परंतु स्वयं ज्ञान का निर्माण कैसे करें? हमारा मार्गदर्शन कौन करे? किसकी निगरानी में हम नए ज्ञान का सृजन करें? कौन हमें गलत और सही की जाँच करने के लिए प्रेरित करे आदि? ये कुछ ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो शिक्षक की आवश्यकता एवं महत्ता की ओर इशारा करते हैं।

यह कहा जाता है कि किसी भी बच्चे का प्रथम गुरु उसकी माता होती है और प्रथम विद्यालय उसका घर होता है। परंतु आगे कि औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के मार्ग में शिक्षार्थी को और अन्य शिक्षक भी मिलते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में उसका मार्गदर्शन करते हैं इसलिए किसी व्यक्ति के जीवन में एक ही गुरु या शिक्षक हो यह आवश्यक नहीं है।

शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संबंधों की महत्ता

शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संबंधों से तात्पर्य उनके परस्पर विश्वास, सहयोग, स्नेह, लगाव, मैत्रीपूर्ण व्यवहार एवं एक-दूसरे के प्रति सम्मान आदि से है। शिक्षा के द्वारा मानव मस्तिष्क का सही प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है और शिक्षक इसके सही प्रयोग में सहायता करता है। शिक्षक, शिक्षार्थी का आईना होता है जो हर वक्त अपने शिष्य को हकीकत व वास्तविकता से रूबरू कराता है। आवश्यकता पड़ने पर वह अपने शिक्षार्थियों को डाँटता भी है

और आवश्यकता के अनुसार उन्हें दुलार भी करता है तभी तो कहा गया है कि 'गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट। अंतर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट'।

शिक्षक अपने विचारों एवं व्यवहार से छात्रों व समाज को अपना गुलाम नहीं बनाता अपितु स्वतंत्र चिंतन एवं स्वयं की निर्णय शक्ति के द्वारा उन्हें अपने स्वयं के गुणों से अवगत कराने का प्रयास करता है। वह हमें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है जैसे गुरु सुकरात ने अपने शिष्यों व समाज से कहा था, अपने आप को पहचानो अर्थात् अपनी शक्तियों को पहचानो जिनके द्वारा हम एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने समाज को बताया कि सच्चा ज्ञान व वास्तविक ज्ञान संभव है, बशर्ते (उसके लिए ठीक तौर पर प्रयास किया जाए) वे बातें जो हमारी समझ में आती हैं या हमारे सामने आई हैं उन्हें तत्संबंधी घटनाओं पर हम परखें। इस तरह अनेक परखों एवं जाँच के बाद हम एक सच्चाई एवं वास्तविकता पर पहुँच सकते हैं जो हमें भ्रमों से बाहर निकालकर हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। इस प्रकार शिक्षक हमें बताता है कि हमें अपनी अज्ञानताओं का भी ज्ञान होना चाहिए।

शिक्षक, छात्रों को सपने दिखाता नहीं है वरन् उन्हें पूरा करने में उनकी सहायता भी करता है। वह विभिन्न व्यवसायों, जैसे— डॉक्टर, खिलाड़ी, व्यापारी, इंजीनियर, वकील आदि बनने में उनका मार्गदर्शन करता है। छात्रों को हीरे की तरह तराशता है और उनकी प्रतिभाओं को सामने ले कर आता है। इसकी पुष्टि इतिहास में चंद्रगुप्त मौर्य और चाणक्य के संबंधों से भी की जा सकती है कि किस प्रकार आचार्य चाणक्य/विष्णु गुप्त ने एक सामान्य से बालक चंद्रगुप्त मौर्य की प्रतिभा को पहचान कर उसे अखंड भारत का महान सम्राट बना दिया। यही रिश्ता गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन के बीच देखा जा सकता है कि कैसे गुरु द्रोणाचार्य ने अर्जुन को एक महान धनुर्धर बना दिया। गुरु-शिष्य के ऐसे संबंधों के विभिन्न उदाहरण हम अपने समाज में देख सकते हैं।

शिक्षक नि:स्वार्थ होकर अपने शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है। वह कई बार स्वयं इतना सफल नहीं हो पाता पर अपने शिष्यों को अवश्य सफल बनाता है। वह अपने अनुभवों व ज्ञान के माध्यम से अपने छात्रों को वह शिक्षा देता है जिससे कि वे उस सफलता को हासिल कर पाते हैं जिसके कि वे योग्य होते हैं। यह उदाहरण हम वर्तमान समय के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर और उनके गुरु रमाकांत विठ्ठल आचेरकर के मध्य देख सकते हैं कि किस प्रकार बतौर खिलाड़ी उनका करियर ज़्यादा अच्छा नहीं रहा। वे अपने जीवन काल में सिर्फ़ एक ही फ़र्स्ट क्लास मैच खेल पाए परंतु सचिन तेंदुलकर को उन्होंने क्रिकेट की दुनिया का महान खिलाड़ी बना दिया। इसी प्रकार सुपर 30 के संस्थापक आनंद कुमार जो पिता की मृत्यु और आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण स्वयं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दाखिला न ले सके। उन्होंने उसे अपनी कमज़ोरी नहीं बनने दिया बल्कि गरीब बच्चों की काबिलियत को समझते हुए और उनके सपनों को साकार करने के लिए आई.आई.टी. की मुफ़्त में कोचिंग दे रहे हैं।

हमारे समाज में शिक्षकों को भगवान तुल्य माना जाता है। उनका बहुत आदर सम्मान किया जाता है। इसलिए कहा भी गया है— 'गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु

गुरुर देवो महेश्वर:। गुरु: सक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरुवे नम:’। किसी भी काम के लिए उनकी राय ली जाती थी, ली जाती है और ली जाती रहेगी। जहाँ एक तरफ़ शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य घनिष्ठता थी; शिक्षार्थी व समाज में शिक्षकों का इतना सम्मान दिया जाता था, वहीं आज के समय में शिक्षक के सम्मान और शिक्षार्थी के संबंधों में कहीं न कहीं कमी आ रही है। आज उन कारणों पर विचार करने की आवश्यकता है कि कौन-से ऐसे कारक हैं जो इसके लिए ज़िम्मेदार हैं?

शिक्षकों और शिक्षार्थी के आपसी संबंधों में कमी के लिए ज़िम्मेदार कारक

1. कारण जिनके लिए शिक्षक स्वयं उत्तरदायी हो सकते हैं

मानवीय व भावात्मक संबंध की उपेक्षा करना और केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहना—

पाठ्यवस्तु की अधिकता के कारण कई बार हमारे शिक्षक पाठ्यक्रम की उतनी विषयवस्तु तक ही सीमित रहते हैं जितना कि छात्रों की परीक्षा के लिए आवश्यक है उनका उद्देश्य पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त कराना होता है जिसके कारण वे छात्रों के साथ कक्षा में कोई मानवीय व भावात्मक संबंध नहीं बना पाते और कक्षा में जाते ही पढ़ना शुरु कर देते हैं। वे नहीं जानते कि उनका शिक्षार्थी कौन है? उसका पारिवारिक परिवेश कैसा है? उसका अधिगम स्तर क्या है? आदि। वे छात्रों की आवश्यकताओं एवं रुचि का ध्यान न रखते हुए उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं एवं उनकी भावनाओं का सम्मान भी नहीं करते, जिससे छात्रों से उनके संबंधों में नीरसता आने लगती है। छात्र भी ऐसे शिक्षकों को न केवल कम पसंद करना शुरु कर देते हैं बल्कि ऐसे शिक्षकों के लिए उनका सम्मान भी कम हो जाता है।

विषय संबंधी ज्ञान का अभाव होना—

हमारे शिक्षार्थी जिज्ञासु प्रवृति के होते हैं, वे हमेशा नए ज्ञान की माँग करते हैं और एक जैसी बातों को बार-बार सुनना पसंद नहीं करते। उनकी हमेशा यह अपेक्षा रहती है कि उनकी समस्याओं का हल उनके शिक्षकों के पास अवश्य मिलेगा और ऐसी दशा में जब शिक्षक उनका मार्गदर्शन नहीं कर पाते या असफल हो जाते हैं, तब उनका भरोसा उन शिक्षकों पर से उठ जाता है। दूसरा एक कटु सत्य यह भी है कि नौकरी पाने के बाद हमारे बहुत से शिक्षक अपने आप को सुरक्षित समझ, अपने ज्ञान को आगे नहीं बढ़ाते हैं। वे नयी जानकारियाँ एकत्रित नहीं करते और न ही अपने छात्रों के साथ उन्हें साझा करते हैं जिसके कारण विषय पर उनकी पकड़ नहीं बन पाती और छात्र उनसे प्रभावित नहीं हो पाते परिणामस्वरूप शिक्षक के सम्मान में कमी आने लगती है।

शिक्षक का नज़रिया संकुचित होना व व्यावसायिक हो जाना—

वर्तमान समय में शिक्षक कहीं न कहीं स्वार्थी होता जा रहा है। वह अपने हितों के प्रति सजग होने के साथ-साथ अपनी तरक्की के विषय में अधिक सोचने लगा है। वह छात्र केंद्रित होने के स्थान पर आत्मकेंद्रित और आर्थिक केंद्रित होता जा रहा है और परिणामस्वरूप धीरे-धीरे व्यवसायी होता जा रहा है। कक्षा में शिक्षण के अपेक्षा प्राइवेट ट्यूशन या कोचिंग देने में रुचि व विश्वास रखने लगा है। हाँलाकि, शिक्षा के अधिकार 2009 के तहत इस पर रोक लगाई गई है परंतु फिर भी चोरी छुपे वह इस काम को करने का प्रयास करता है। समाज सेवा का भाव उनसे कहीं दूर होता जा रहा है। नैतिक, भावात्मक, सामाजिक आदि मूल्य भी उनमें कम होते जा रहे हैं।

उसने अपनी भूमिका को सिर्फ़ विषयवस्तु के संप्रेक्षण तक ही सीमित कर लिया है जिसके कारण वह स्वयं छात्रों के साथ मानवीय संबंध बनाना पसंद नहीं करता और स्वयं उनसे एक दूरी बनाकर रखता है।

शिक्षण व तकनीकी कौशलों और उनसे संबंधित योग्यता का अभाव होना—

इस बात से आज इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारे बहुत से शिक्षक शिक्षण कौशलों एवं तकनीकी ज्ञान में इतने निपुण नहीं है जितना कि उन्हें होना चाहिए। वे न तो उचित प्रकार से उनका प्रशिक्षण लेते हैं और न ही उसमें रुचि लेते हैं। आज भी परंपरागत विधियों व पुरानी तकनीक से पढ़ाना पसंद करते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया निष्क्रिय एवं नीरस रहती है। वे छात्रों को कोई नयी चुनौती इस डर से नहीं दे पाते कि कहीं उनकी कमी के बारे में छात्रों को पता न चल जाए या उन्हें स्वयं कोई नया काम करना न पड़ जाए। जिसके कारण छात्रों के सम्मुख उनकी छवि खराब हो जाती है और छात्र उन्हें पसंद नहीं करते और उनसे दूरी बनाने लगते हैं।

व्यक्तित्व एवं व्यवहार का प्रभावी न होना व पक्षपाती होना—

यह सर्वमान्य सत्य है कि आज भी हमारा समाज व शिक्षार्थी केवल उन शिक्षकों का सम्मान, स्नेह व आदर करना पसंद करते हैं जिनका व्यक्तित्व एवं व्यवहार प्रभावी होता है और जो साधारण जीवन और उच्च विचारों में विश्वास रखते हैं। व्यक्तित्व से अभिप्राय है कि शिक्षक के आंतरिक व बाहरी गुण अर्थात् शिक्षक की सोच, निर्णय शक्ति, भाषा, संप्रेषण, व्यवहारवादी कौशल आदि में संपन्न होना। जब तक शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावी नहीं होता तब तक वह छात्रों के साथ मधुर संबंध नहीं बना पाता। उसकी विषय पर पकड़, भाषा पर नियंत्रण, शब्दावली का चयन, समय की पाबंदी के साथ-साथ कथनी व करनी आदि में अंतर नहीं होना चाहिए। आज के हमारे शिक्षकों के पास सैद्धांतिक ज्ञान तो बहुत है परंतु व्यावहारिक ज्ञान के क्षेत्र में अभी भी वे पिछड़े हुए हैं। वे अपने तानाशाही रवैये, पक्षपाती व्यवहार, कक्षा में देरी से पहुँचना व अकुशल संप्रेषण कौशल आदि के कारण भी अपनी छवि को खराब कर लेते हैं। एक शिक्षक को पक्षपाती नहीं होना चाहिए। शिक्षक सभ्य समाज का निर्माता है हमारा समाज उनकी कही बातों व उनके आचरण का अनुसरण करता है। यदि वे कोई भी गलती करते हैं तो हमारा समाज उनके द्वारा की जाने वाली गलतियों को जल्दी से माफ़ नहीं करता। जिस प्रकार गुरु द्रोणाचार्य ने भले ही अर्जुन को एक महान धनुर्धर बना दिया परंतु इतिहास में आज भी एकलव्य के साथ उनके पक्षपाती व्यवहार को भुलाया नहीं जाता।

बदलते समय में शिक्षक का समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप परिवर्तित न होना—

हमारा समाज निरंतर गतिशील है। वैश्वीकरण, सार्वजनीकरण, निजीकरण, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक संदर्भों में परिवर्तन के कारण हमारी परिस्थितियाँ निरंतर परिवर्तनशील हैं। इन बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप छात्रों को बदलने अर्थात् उनके ज्ञान, समझ व व्यवहार में परिवर्तन लाने की मुख्य ज़िम्मेदारी एक शिक्षक की ही होती है, परंतु हमारे बहुत से शिक्षक अभी भी लकीर के फ़कीर बने हुए हैं। बदलते समय में शिक्षक की भूमिका के कुशल निर्वहन के लिए एक शिक्षक को—

- विद्यार्थियों की समझ होनी चाहिए।

- अपने विषय पर अच्छी पकड़ होने के साथ-साथ एक अच्छा ज्ञाता होना चाहिए।
- कक्षा-कक्ष प्रबंधन में निपुणता होनी चाहिए।
- एक कुशल अवलोकनकर्ता, निरीक्षक एवं मूल्यांकनकर्ता होना चाहिए।
- सृजनात्मक व समीक्षात्मक सोच के साथ स्वयं निर्णय लेना आना चाहिए।
- निरंतर ज्ञान प्राप्ति की अग्रसर एवं जिज्ञासु रहना चाहिए।
- समाज में होने वाले परिवर्तन एवं सम-सामयिक घटनाओं की तथ्यों के अनुसार जानकारी होनी चाहिए।
- विषय सामग्री के उचित निष्पादन के लिए अन्य शिक्षण कौशलों, जैसे— जिज्ञासा प्रकट करना, पूछताछ करना (प्रश्न करना), उदाहरण या दृष्टांत देकर समझाना, वर्णन करना, चित्रण करना, व्याख्या करना, संग्रह करना, प्रदर्शित करना, विचार विमर्श करना, मूल्यांकन करना, विश्लेषण करना, संचालन करना, निर्णय करना आदि कौशलों का उचित समझ के साथ प्रभावी एवं समुचित प्रयोग करना आना चाहिए।
- नेतृत्व के साथ-साथ एक प्रभावी प्रबंधक अर्थात् समय, धन, भौतिक संसाधनों तथा सुविधाओं के साथ-साथ मानवीय संसाधनों के प्रबंधन का भी गुण होना चाहिए। कक्षा के अंदर व बाहर के अधिगम वातावरण में उचित सामंजस्य बनाना आना चाहिए।
- विद्यालयी व सामुदायिक संसाधनों का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भरपूर उपयोग करते हुए अध्यापक को अपने अध्यापन कार्य को संगठित, नियोजित और कार्यान्वित करने का हुनर आना चाहिए।
- विषयवस्तु एवं शिक्षण-अधिगम विधि के अनुरूप शिक्षण-अधिगम सामग्री का चुनाव एवं उसका प्रयोग करना आना चाहिए।
- विभिन्न शिक्षण-अधिगम विधियों का ज्ञान होने के साथ-साथ विषयवस्तु के अनुसार उनका प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन आना चाहिए।
- स्वयं के व्यवहार एवं निजी अनुभवों से छात्रों को प्रभावित एवं प्रेरित करना चाहिए।
- प्रधानाचार्य, छात्रों व समाज के साथ सहयोग से काम करना आना चाहिए।
- संप्रेषण कौशल में प्रवीणता होनी चाहिए ताकि अपनी बात प्रभावी ढंग से छात्रों तक पहुँचा सकें।
- सांस्कृतिक विविधता में काम करने वाला होना चाहिए।
- तकनीकी अर्थात् उपकरणों के संचालन की समझ होनी चाहिए।
- मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता होना चाहिए।

इस बात में बिल्कुल संदेह नहीं है कि हमारे शिक्षक मेहनती नहीं है या फिर अपने काम के प्रति समर्पित नहीं है परंतु कहीं न कहीं एक तरफ़ जहाँ उपरोक्त योग्यताओं व क्षमताओं में कमी आ रही है, वहीं दूसरी तरफ़ हमारे कुछ शिक्षक ऐसे भी हैं जिन्होंने अपनी कार्यशैली, आचरण, प्रतिभा, योग्यता आदि से एक गलत उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है, जिसके कारण आज शिक्षक समाज पर अँगुली उठने लगी है जिस तरह एक एक मछली जैसे सारे तालाब के जल को गंदा कर देती है, उसी प्रकार कुछ

शिक्षकों ने पूरे शिक्षक समाज के सम्मान को धूमिल करने का प्रयास किया है।

2. कारण जिनके लिए शिक्षार्थी उत्तरदायी हैं

शिक्षार्थियों का बदलता हुआ व्यवहार व घटते हुए नैतिक मूल्य—

हमारे व्यवहार में तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन में अधिकांश योगदान हमारे पारिवारिक परिवेश, मित्र मंडली, सोशल मीडिया व प्रिंट मीडिया का है। हम उस काम को और उन बातों को अपने व्यवहार में ज़्यादा अपनाते हैं जो हमारे लिए सुविधाजनक होती हैं, चाहे भविष्य में उसके परिणाम घातक क्यों न हों। यही कारण है कि आज हमारे शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत व्यवहार में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है। धीरे-धीरे हमारे छात्र नैतिक, सांस्कृतिक व आदर्श मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। आधुनिकता के इस समय में वे माता-पिता का सम्मान व शिक्षकों का सम्मान करना भूलते जा रहे हैं और उनके दायित्व को अपनी तरफ़ से सीमित करने लगे हैं, उनके अनुसार माता-पिता का दायित्व, उनका पालन-पोषण करना व उनकी ज़रूरतों को पूरा करना होता है और इसी प्रकार शिक्षक का काम उन्हें पढ़ाना होता है जिसका कि उसे वेतन मिलता है। इसके अलावा माता-पिता व शिक्षकों के प्रति उनकी कोई संवेदना नहीं होती। यदि उन्हें कुछ समझाया जाता है तो वे उसे आधुनिक युग में मानसिक संकीर्णता का उदाहरण बताते हैं। इसलिए यह कहना भी आज अनुचित न होगा कि 'आधुनिकता व संकीर्णता' दो ऐसे रक्षात्मक शब्द कहे जा सकते हैं जिनकी आड़ में हम कई बार अपनी गलत बातों, गलत सोच को सही साबित करने की कोशिश करते हैं।

पारिवारिक वातावरण—

किसी बच्चे के पालन-पोषण एवं सामाजीकरण में सबसे अधिक योगदान उसके परिवार के सदस्यों एवं उसके माता-पिता का होता है। यदि माता-पिता के संबंध अपने बच्चों के साथ अच्छे नहीं होते या फिर माता-पिता उनकी गलत बातों का समर्थन करते हैं तब इन दोनों ही स्थिति में छात्र न तो शिक्षक का सम्मान करते हैं और न ही समाज के अन्य लोगों का सम्मान करते हैं। ऐसे बच्चे झगड़ालू, आक्रामक, चिड़चिड़े व अवज्ञाकारी बन जाते हैं। उनमें कोई न कोई मानसिक विकार उत्पन्न हो जाता है।

शिक्षार्थी का स्वार्थी होना—

जहाँ एक तरफ़ हम बात करते हैं कि हमारा शिक्षक कहीं न कहीं स्वार्थी होता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ़ देखें तो आज का हमारा शिक्षार्थी भी स्वार्थी हो गया है। अक्सर यह देखा जाता है कि जब उन्हें काम होता है या परीक्षा निकट होती है तब वे शिक्षक का सम्मान, आज्ञा का पालन व शिक्षकों के संपर्क में आने लगते हैं और जैसे ही परीक्षा या काम खत्म होता है, शिक्षक से संपर्क खत्म कर देते हैं जो शिक्षकों से उनके प्रति लगाव को कम करता है।

मोबाइल, मीडिया, इंटरनेट, व्हाट्सएप आदि पर आश्रित व उसकी लत होना—

आज के समय में छात्र कम समय में अधिक जानकारी विभिन्न स्रोतों से हासिल कर लेता है और उसकी जाँच भी आसानी से कर लेता है इसलिए शिक्षक पर उसकी निर्भरता कम होती जा रही है और आपस की दूरी भी बढ़ती जा रही है मोबाइल, मीडिया, इंटरनेट, व्हाट्सएप, सोशल मीडिया आदि का सकारात्मक प्रयोग जहाँ फ़ायदा पहुँचाता है वहीं दूसरी तरफ़ इनके

अत्याधिक प्रयोग व लत से कई स्वास्थ्य संबंधी रोगों को भी जन्म मिलता है, जैसे छात्रों का चिड़चिड़ा व आक्रामक होना जिसके कारण उनके सामाजिक व भावात्मक व्यवहार में कमी आई है।

3. कारण जिनके लिए तकनीकी उत्तरदायी हैं

आज का युग टेक्नॉलॉजी अर्थात् तकनीकी का युग है। इस युग को कल युग अर्थात् मशीनी युग भी कहते हैं। मशीनों में क्योंकि संवेदनाएँ नहीं होतीं इसलिए वे एक संवेदनहीन समाज को बढ़ावा देती हैं, परिणामस्वरूप हमारे छात्र दूसरे की समस्याओं एवं भावनाओं की तदनुभूति नहीं कर पाते और सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारे बहुत से शिक्षार्थी भी आगे चलकर शिक्षक बनते हैं, तब उस समय वे कैसे एक अच्छे शिक्षार्थी का निर्माण करेंगे जब वे स्वयं में अधूरे हैं।

4. कारण जिनके लिए सरकार की नीतियाँ एवं बदलता हुआ स्वरूप उत्तरदायी है

ऐसा नहीं है कि पुराने समय के हमारे छात्रों में भावनाएँ, संवेदनाएँ, आत्मसम्मान नहीं था या वे बेइज़्ज़ती, अपमान, निरादर, तनाव जैसे शब्दों से परीचित नहीं थे या इन्हें महसूस नहीं करते थे या उनके माता-पिता व शिक्षक अपने बच्चों या छात्रों की शिक्षा या भलाई नहीं चाहते थे। वास्तविकता यह है कि उस समय की शिक्षा प्रणाली में या समाज में इन शब्दों की उपयोगिता को इतनी एहमियत नहीं दी जाती थी। दूसरा शिक्षक, शिक्षार्थी और माता-पिता आत्मीयता और अपनेपन की भावना से इतने जुड़े हुए थे कि शिक्षार्थी, शिक्षक द्वारा कही हुई हर बात को अपनी-अपनी भलाई के संदर्भ में कही हुई बात मानते थे। परंतु आज के समय में हमने बेइज़्ज़ती, अपमान, निरादर, तनाव जैसे शब्दों का इस प्रकार से प्रयोग किया है कि आज एक छोटा-सा 4–5 साल का बच्चा भी उन्हें कुछ समझाने पर बेइज़्ज़ती महसूस करता है हाँलाकि, उसे इन शब्दों का ढँग से मतलब भी नहीं पता होता। वह बस इतना जानता व समझता है कि यदि उसे किसी के सामने समझाया गया या कुछ कहा गया तो उसकी बेइज़्ज़ती हो जाएगी, जो कि गलत है। इस प्रकार से इन शब्दों के बार-बार वर्णन एवं रिवायत ने कहीं न कहीं हमारे छात्रों को मानसिक रूप से कमज़ोर बना दिया है। जिसके कारण सामाजिक समायोजन व सहनशीलता की कमी आ रही है वे शिक्षक की हर छोटी बात को महसूस करने लगते हैं और बहुत जल्दी बिना सोचे समझे गलत कदम उठा लेते हैं। सरकार की नीतियों को और शिक्षा के बदलते हुए स्वरूप ने भी इस खाई को बढ़ाने में कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है, जैसे शिक्षा का अधिकार की धारा 17 के अनुसार शारीरिक व मानसिक सज़ा पर रोक लगाना अपने आप में बिल्कुल जायज़ है। इस पर रोक लगनी भी चाहिए थी क्योंकि इसके कारण छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास में बाधा आती है। परंतु छात्रों ने इसका फ़ायदा उठाना शुरु कर दिया। अब वे शिक्षक के ज़रा से धमकाने व समझाने पर भी कई बार उसके खिलाफ़ हो जाते हैं वहीं दूसरी तरफ़ शिक्षक भी छात्रों के गलती को बताने व उन्हें समझाने से डरने लगे हैं जिसके कारण दोनों के मध्य अपनेपन की भावना व एक-दूसरे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में कहीं न कहीं कमी आई है।

विद्यालय से निष्कासित करने पर रोक या फ़ेल करने पर रोक या मूल्यांकन की नीति की बात करें तो इन नियमों के द्वारा शिक्षक की स्वतंत्र निर्णय शक्ति को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया गया है जो कि अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच की दूरी को बढ़ाने में सहायक हुए हैं।

किताबी ज्ञान पर निर्भरता—

किसी भी छात्र का मूल्यांकन उसके अंको के आधार पर न होकर उसकी योग्यता के आधार पर होना चाहिए परंतु हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति व हमारी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कहीं न कहीं किताबी व सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक बल देती है और अंको के आधार पर मूल्यांकन को प्रोत्साहित करती है। किताबी व सैद्धांतिक ज्ञान और अंको पर अधिक निर्भरता ने भी संबंधों की दूरी को बढ़ाने का प्रयास किया है। जिसके कारण छात्र और शिक्षक सिर्फ़ उसी विषयवस्तु के इर्दगिर्द ही घूमते रहते हैं।

शिक्षण के अलावा शिक्षक को विद्यालय के अन्य कार्यों में संलग्न करना—

यदि हम विद्यालयी शिक्षा की बात करें तो हमारे शिक्षक के पास अध्यापन के अलावा स्कूल व समुदाय के इतने कार्य होते हैं कि वे चाहकर भी अपने छात्रों को उतना समय नहीं दे पाते जितना कि उन्हें देना चाहिए। इसका प्रभाव यह होता है कि हमारे छात्र ये समझने लगते हैं कि हमारे शिक्षक कामचोर हैं जो विद्यालय आने पर भी हमारी कक्षा में नहीं आते।

5. कोरोना महामारी

कोरोना महामारी के समय में मोबाइल, मीडिया, इंटरनेट, व्हाट्सएप आदि पर हमारी व हमारे छात्रों की निर्भरता और शिक्षक से परस्पर प्रत्यक्ष संवाद की दूरी बढ़ी है। मोबाइल, मीडिया, इंटरनेट, व्हाट्सएप आदि के अत्याधिक प्रयोग ने छात्रों के मानसिक तनाव को बहुत बढ़ाया है। इसका असर उनकी स्मरण शक्ति एवं आँखों की रोशनी पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है जिसके कारण छात्र अब ऑनलाइन कक्षा लेने से कतराते हैं जिस कारण से शिक्षक और छात्रों के मानवीय संबंधों में भी उसका असर देखने को मिल रहा है। यह कहना अनुचित होगा कि संबंधों में कमी की शुरुआत कोरोना के समय में आई, क्योंकि इसकी शुरुआत तो पहले से ही हो चुकी थी।

शिक्षक और शिक्षार्थी के संबधों में मधुरता, विश्वास व निकटता लाने हेतु किए गए उपाय

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्र के भविष्य के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता है। उसका निजी व्यक्तित्व, आचरण एवं शैक्षिक योग्यता छात्रों की मानसिकता पर बहुत प्रभाव डालती है। इस दिशा में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968* और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986* में निम्न क्षमताओं व योग्यताओं के विकास पर बल दिया गया।

- शैक्षिक क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने एवं सोचने की क्षमता।
- उत्प्रेरक एवं समझदार लोगों के साथ कार्य करने की योग्यता।
- समझ एवं अनुभव के आधार पर नेतृत्व करने की क्षमता।
- सृजनात्मक एवं स्थिर कार्य करने की योग्यता।
- मानवीय एवं वित्तीय संसाधनों को संगठित करने की योग्यता।
- समाज एवं शासन के विभिन्न विभागों के साथ कार्य करने की योग्यता।
- उपलब्धि के लिए उच्च अभिप्रेरणात्मक आवश्यकताएँ होना।
- उत्तरदायित्व स्वीकारने एवं ज़िम्मेदारियों को समझने की इच्छाशक्ति तथा उच्च अंतर्वैयक्तिक कौशल।
- पूर्व सेवाकालीन और सेवाकालीन प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण पर बल देना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में अध्यापकों के आवश्यक तैयारी हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं—

- शिक्षकों की ऐसी तैयारी ज़रूरी हो कि वे विद्यार्थियों का ध्यान रख सकें और उनके साथ रहना पसंद करें।
- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में विद्यार्थियों को समझ सकें।
- ग्रहणशील और निरंतर सीखने वाले हों।
- शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखें तथा निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।
- समाज के प्रति अपने दायित्व को समझें और बेहतर विश्व के लिए काम करें।
- उत्पादक कार्य के महत्व को समझें तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यावहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।
- पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षक की महत्ता को स्वीकार करते हुए यह माना गया कि शिक्षक अपने छात्रों के भविष्य को आकार देते हैं और शिक्षक समाज के अन्य लोगों के साथ मिलकर न केवल छात्रों के व्यवहार में आए नकारात्मक परिवर्तनों में सुधार कर सकता है बल्कि अपने अथक प्रयासों से वह छात्रों को अपनी ओर नज़दीक लाकर उनमें अपने प्रति पुन: विश्वास जाग्रत कर सकता है। शिक्षकों की कुशलता बढ़ाने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कई प्रावधानों का वर्णन किया गया है, जैसे—

1. शिक्षकों को विद्यालय में गैर-शिक्षण गतिविधियों में कार्य करने की अनुमति नहीं होगी।
2. शिक्षकों को पाठ्यक्रम और शिक्षण के उन पहलुओं को चयनित करने के लिए ज़्यादा स्वायत्तता दी जाएगी जिससे कि वे उन तरीकों से पढ़ा सकें जो उनकी कक्षाओं और समुदाय के विद्यार्थियों के लिए प्रभावी हों। शिक्षक छात्रों के भावनात्मक पक्षों पर ध्यान देते हुए उनके सर्वांगीण विकास का प्रयास करेंगे।
3. शिक्षकों को ऐसी शिक्षण विधि अपनाने के लिए सम्मानित किया जाएगा जिससे कि शिक्षार्थियों के सीखने के प्रतिफल में वृद्धि हो।
4. शिक्षक को खुद में सुधार करने के लिए और पेशे से संबंधित आधुनिक विचार और नवाचार को सीखने के लगातार अवसर दिए जाएँगे।
5. प्रत्येक शिक्षक से अपेक्षित होगा कि वे स्वयं के व्यावसायिक विकास के लिए स्वेच्छा से प्रत्येक वर्ष लगभग 50 घंटों के सी.पी.डी. (सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम) में हिस्सा लें।
6. शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एन.सी.टी.ई. द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. के परामर्श से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के सिद्धांतों के आधार पर एक नवीन और व्यापक अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.एफ़.टी.ई. (नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन) तैयार की जाएगी।

42वें संविधान संशोधन (1976) के बाद शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल कर दिया गया था।

इसलिए शिक्षा की राज्य सरकारों पर भी उतनी ही ज़िम्मेदारी है जितनी की केंद्र पर है। शिक्षा के स्तर और उसकी गुणवत्ता को प्राथमिकता देने के साथ-साथ शिक्षक और शिक्षार्थी के संबंधो की गंभीरता को दिल्ली सरकार ने समझा और माता-पिता, शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य मधुर संबंध बनाने के लिए पिछले पाँच वर्षों में अपने विद्यालयों में कई योजनाओं को चलाया, जैसे— मेंटर शिक्षक तैयार करना और शिक्षक विकास समन्वयक (टी.डी.सी) तैयार करना, जिसका उद्देश्य आपस में साथी शिक्षकों के सहयोग से सीखने को बढ़ावा देना है जिससे वे अपने शिक्षार्थियों को ज़्यादा कुशलता व दक्षता के साथ अधिगम कराने में सहायक हो सकें।

मेगा माता-पिता अभिभावक सभा (एम.पी.टी.एम.)

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सरकारी विद्यालयों में मेगा पी.टी.एम. से पहले भी माता-पिता अभिभावक सभा का अयोजन किया जाता था। परंतु उसमें कुछ खामियाँ होती थीं, जैसे— (1) सभा के आयोजन की कोई तिथि पूर्व-निर्धारित नहीं होती थी और यह शिक्षक की अपनी इच्छा या प्रधानाचार्य या शिक्षा अधिकारी की इच्छा पर निर्भर करती थी कि वे कब पी.टी.एम. का आयोजन अपने विद्यालय में करेंगे (2) माता-पिता कि उपस्थिति न के बराबर होती थी। इसके पीछे वैसे तो कई कारण थे परंतु दो मुख्य कारण जो सामने आए (i) माता-पिता या अभिभावकों को सही प्रकार से सूचित न करना (ii) पी.टी.एम. का मुख्य मुद्दा शिक्षार्थियों की शिकायत पर केंद्रित रहना जिसके कारण अभिभावक इस सभा में रुचि नहीं लेते थे और शिक्षार्थियों में भी अपने लिए भय उत्पन्न हो जाता था और वे अपने आपको शिक्षक और विद्यालय में सुरक्षित नहीं मानते थे। जिसके कारण शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य एक संवाद की कमी पाई जाती थी। इन सब कमियों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली सरकार के द्वारा 30 जुलाई, 2016 में शिक्षा निदेशालय दिल्ली के सभी विद्यालयों में एक साथ प्रथम मेगा माता-पिता अभिभावक सभा का आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए माता-पिता, शिक्षक और शिक्षार्थी तीनों के मध्य एक पारस्परिक सकारात्मक संबंध बनाना था तथा तीनों को शिक्षार्थी विकास के लिए एक साथ जोड़ना था, जिससे कि वे बिना किसी हिचकिचाहाट के शिक्षार्थी के हित की बात कर सकें और शिक्षार्थी भी बिना किसी डर व भय के साथ अपनी बात अपने शिक्षकों के सम्मुख रख सकें। इस प्रकार की मेगा पी.टी.एम वर्ष में दो प्रकार से आयोजित की जाती है जिसमें छात्रों के शैक्षिक व व्यवहारात्मक दोनों पहलुओं पर चर्चा की जाती है। इस सभा के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं, फिर चाहे वे अभिभावकों की उपस्थिति को लेकर हो या फिर छात्रों के शैक्षिक व व्यवहारगत विकास की बात हो। यह अपने आप में एक सराहनीय कदम है। इसके माध्यम से बहुत सारे शिक्षार्थियों के अभिभावक व शिक्षार्थी स्वयं शिक्षकों के संपर्क में आए तो वहीं दूसरी तरफ़ शिक्षकों ने भी एक बड़ी सकारात्मक भूमिका निभाई।

हेप्पीनस करिकुलम/माइंड्फुलनैस

हमने देखा है कि किस प्रकार से हमारी नयी पीढ़ी अपने नैतिक व व्यवहारगत मूल्य खोती जा ही है? किस प्रकार से अपनी बढ़ती इच्छाओं और आकांक्षाओं के कारण आज का शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों तनाव में हैं और दोनों ने अपनी

प्रसन्नता, खुशी को इनके आगे बलि चढ़ा दिया है? उन खोते हुए नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित व तनाव को आंतरिक प्रसन्नता में बदलने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा हेप्पीनस करिकुलम/माइंड्फुलनैस की शुरुआत 2 जुलाई 2018 में की गई। यह कक्षा एक से आठ तक के छात्रों की मानसिकता को विकसित करने का एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जो शिक्षार्थियों को सामाजिक भावनात्मक, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और संबंध निर्माण सिखाता है। कहानियों व माइंड्फुलनैस के माध्यम से शिक्षार्थियों की चेतना एवं संबंधों के साथ जीने की भावना को जाग्रत करने का प्रयास करता है।

मिशन बुनियाद

हमारे सरकारी विद्यालयों में अधिकांश छात्र बहुत गरीब परिवारों से आते हैं, जिनके माता-पिता अनपढ़ या न के बराबर पढ़े-लिखे होते हैं और मज़दूरी करते हैं। वे अपने बच्चों को विद्यालय तो भेज देते हैं परंतु शैक्षिक कार्य में उनकी कोई सहायता नहीं कर पाते। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का उत्तरदायित्व और अधिक हो जाता है। परंतु कई कारणों से शिक्षक भी उन छात्रों को उतना समय नहीं दे पाते, जितना कि उन्हें देना चाहिए। वे छात्रों की भावनाओं उनकी रुचियों व आवश्यकताओं की तरफ़ ध्यान नहीं देते। शिक्षार्थी भी चीज़ें समझ न आने पर उसे न तो अपने माता-पिता से और न ही अपने शिक्षकों से पूछ पाते हैं जिसके कारण धीरे-धीरे आसान चीज़ें भी उनके लिए कठिन बनने लग जाती हैं परिणामस्वरूप वे शिक्षा व शिक्षक दोनों से डरने लगते हैं और अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ देते हैं। नैशनल अचीवमेंट सर्वे (एन.ए.एस) में पाया गया कि कक्षा 3 से लेकर कक्षा 5 तक के लगभग 50 प्रतिशत छात्रों का अधिगम स्तर विज्ञान, गणित और भाषा में बहुत निराशाजनक है इसलिए कक्षा 3 से कक्षा 8 तक के छात्रों के अधिगम स्तर को सुधारने के लिए और शिक्षकों तक छात्रों की पहुँच आसान बनाने के लिए 11 अप्रैल, 2018 को मिशन बुनियाद की शुरुआत की गई।

चुनौती

यह योजना भी वर्ष 2018 में शुरु की गई। इसका मुख्य उद्देश्य बीच में ही स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या व उनके पीछे के कारणों को जानते हुए एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करना है। यह योजना विशेषत: कक्षा 6 से 8 तक के शिक्षार्थियों के लिए चलायी गई ताकि उनके शिक्षा के स्तर को आगे बढ़ाया जा सके।

उद्यमिता मानसिकता कार्यक्रम

13 फ़रवरी, 2019 में इसकी शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य छात्रों को नौकरी खोजने वाला न बनाकर, उन्हें नौकरी देने वाला बनाने के साथ-साथ एक अच्छा इंसान बनाना भी है। यह कक्षा 9 से 12वीं तक के शिक्षार्थियों के लिए बनाया गया है। विद्यालयी शिक्षा पास करने के उपरांत अधिकतर शिक्षक और छात्र का संबंध खत्म हुआ माना जाता है और जब छात्र अपनी नौकरी के क्षेत्र में प्रवेश करता था तो उस समय वह अपने आप को बहुत नि:सहाय समझता है, उसे लगता है कि इस समय कोई भी उसका सहायक नहीं है। परंतु इस योजना के तहत शिक्षक न केवल 9वीं कक्षा से ही छात्रों से जुड़ जाते हैं बल्कि आगे तक, 12वीं कक्षा के बाद भी उन्हें परामर्श देते रहते हैं और उनके बीच एक गहरा मानवीय संबंध भी बन जाता है।

निष्कर्ष

हमारी और हमारे राष्ट्र की कामयाबी के पीछे हमारे शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है इसलिए शिक्षकों और छात्रों के मध्य मधुर संबंध बनाने के लिए राष्ट्रीय व राज्य दोनों स्तर पर प्रयास किए गए हैं और किए भी जा रहे हैं। आधुनिकता एवं तकनीकी के इस समय में शिक्षकों और छात्रों दोनों के आचरण एवं उनकी योग्यता में परिवर्तन आया है। आज के समय में शिक्षक से बहुत ज़्यादा अपेक्षाएँ हैं। उसकी भूमिका केवल कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तक ही सीमित नहीं रह गई है। उसे अपने छात्रों के साथ भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभानी होती हैं। शिक्षकों को हमेशा अपने छात्रों से दो कदम आगे चलने होंगे व छात्रों में विश्वास जाग्रत कर उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन करने के लिए निरंतर प्रयास करना होगा और इस बात को भलीभाँति समझना होगा कि जब तक हम अपने छात्रों को कुछ नया, अर्थपूर्ण एवं उनकी रुचि के अनुसार ज्ञान प्रदान नहीं करते, उन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शामिल नहीं करते, तब तक हमारे छात्र हमसे नज़दीकी नहीं बना पाते। शिक्षक की भूमिका एक ऐसे जादूगर की होनी चाहिए जिसके पिटारे में छात्रों की आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार हमेशा कुछ न कुछ नया हो। उन्हें स्वयं आदर्श बनकर किताबों के अध्यायों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी। समाज को भी शिक्षक की भूमिका को हमेशा ध्यान रखना होगा और यह भी ध्यान रखना होगा कि जब शिक्षक अपनी भूमिका को भूलने लगे तो यह समझ लेना चाहिए कि उस समाज, देश या राष्ट्र का पतन शीघ्र ही निश्चित है।

संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय. 1968. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

www.education.gov.in

www.edudel.nic.in

www.tak-in.cdn.ampproject.org

www.shivra.com